प्रथम अध्याय

मालती जोशी : व्यक्तित्व और कृतित्व

'मालती जोशी का व्यक्तित्व और कृतित्व'

'समकालीन युग, की सर्वाधिक लोकप्रिय लेखिका 'श्रीमती मालती जोशी' का कथा–साहित्य प्रशंसनीय है । आधुनिक युग में भी मालती जोशी जैसी महिला कथाकार नारी जीवन को अपना विषय बनाकर भारत की संस्कृती और परंपरा को सहज स्वाभाविक अभिव्यक्ति दे रही है । आम–तौर पर इनका साहित्य मध्यवर्गीय नारी जीवन का रुप खोल देती है । इन्होंने कथाकार के रुप में जो ख्याति अर्जित की है, वह अपने आप में गौरव की बात है । इनके व्यक्तित्व के बारें में हमे बहुत कम परिचय मिला है फिर भी इनकी रचनाओं के माध्यम से इनका व्यक्तित्व और कृतित्व मुखर हुआ है ।

श्रीमती मालती जोशी के कृतित्व को समझने के लिए उनकी जीवनी तथा व्यक्तित्व को समझना आवश्यक है ।

जन्म :–

हिन्दी कहानी क्षेत्र में सर्वाधिक लोकप्रिय कथा – लेखिका श्रीमती मालती जोशी का जन्म एक मराठी – भाषी मध्यमवर्गीय परिवार में 4 जून 1934 को महाराष्ट्र के औरंगाबाद शहर में हुआ है ।

माता – पिता :–

मालती जोशी के पिता पुराने ग्वालियर राज्य में मॅजिस्ट्रेट के पद पर कार्यरत थे । इन्हे सिविल जज भी कहते थे । ग्वालियर राज्य पहले मध्य भारत तथा बाद में मध्यप्रदेश में विलीन हुआ । विवाह पूर्व आपका शुभनाम था 'कु. मालती कृष्णराव दिघे' । आपके पिता कृष्णराव इमानदार अफसर थे । आपकी माता सरलादेवी आदर्श गृहणी थी । आपके पिता साहित्य प्रेमी थे, उन्होंने चार–पाँच कहानियाँ भी लिखी थी । आपके सात भाई बहन थे आपके घर का वातावरण आपको साहित्य की ओर आकर्षित करने के लिए प्रेरणादायक था। इसतरह घर में पढने– लिखने का वातावरण था। लिखने के बीज तभी अंकुरित हुए । आपका एक भाई लन्दन में है शेष तीन इन्दौर में है । एक बहन भी इन्दौर में है । इसतरह आपका परिवार सरकारी ठाठ–बाट तथा शहरी वातावरण में रहते हुए भी मध्यवर्गीय जीवन से गुजरा ।

शिक्षा :–

महाराष्ट्रीय ब्राम्हण परिवार में आपका जन्म हुआ, इसलिए आपकी मातृभाषा मराठी है, पर शिक्षा–दिक्षा हिन्दी में हुई । आपका बचपन तथा शिक्षा–दीक्षा इन्दौर में हुअी । आपने एम.ए. की परीक्षा, हिन्दी साहित्य' विषय लेकर 'इन्दौर विश्वविद्यालय' से पास की । अतएव आपके लेखन का श्रीगणेश भी हिन्दी में ही हुआ । अन तो स्वेर मराठी में भी लिखती है । मातृभाषा मराठी होते हुए भी 'हिन्दी' हमेशा आपका प्रिय विषय रहा है । माध्यमिक विद्यालय में 'श्रीमती शिवादेवी पांडेय' तथा 'कुसुमलता तिवारी' जैसी

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

अध्यापिकाओं ने आपका सराहा तथा प्रेरणा दी । कॉलेज में. डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' एवं श्री. रामचंद्र श्रीवास्तव 'चंद्र' जैसे मनीषियों से आपका सीखने का सुअवसर प्राप्त हुआ । डॉ. शिवमंगल सिंह ने स्नातकोत्तर स्तर पर आपको पढाया। उस समय 'सुमन' जी कवि एवं वक्ता के रुप में सुविख्यात थे । डॉ. सुमन के प्रसाद एवं सरसता आदि गुण अनजाने ही मालती जोशी ने ग्रहण किए । डॉ. सुमन ने रामायण के प्रति मालती जोशी के मन में अपार श्रध्दा जगायी थी इसी कारण मालती जोशी ने रामायण तथा रामचरित को नयी दृष्टि से देखा, परखा है ।

वैवाहिक जीवन :–

आपका (मालती जोशी का विवाह) सन 1959 में अवकाश प्राप्त सुपरिटेंडेंट इंजीनियर 'श्रीमान सोमनाथ' जोशी के साथ संपन्न हुआ । आपके पति अधीक्षण यंत्री के पद से अभी अभी रिटायर हुए है । अब सामाजिक कार्य करते है । सोमनाथ जोशी की सहचारिणी के रुप में अपना सुखी दांपतय जीवन व्यतीत कर रही है । इसीसे सुखी दांपत्य जीवन की परिभाषा सफलतापूर्वक जी रही है । इस प्रकार एक मध्यवर्गीय लडकी की तरह आप पली, पढी, ओर ब्याही गई ।

श्रीमती मालती जोशी के सीमित परिवार में उच्चशिक्षित दो पुत्र है– हषिकेश और दूसरा सच्चिदानंद जिन्हे आप बडे प्यार से कुंदन और नंदन नाम से पुकारती है । हषिकेश इंजिनियरी का संस्कार ग्रहण किया है , तो सच्चिदानंद अपने माँ के संस्कार को आत्मसात किया है । मराठी भाषी संस्कार में पला सच्चिदानंद ने जाति, धर्म तथा प्रदेश को त्यागकर पश्चिम बंगाल की एक युवती से ब्याह कर राष्ट्रीय एकता में सहयोग दिया । यह कार्य माता–पिता के सहकार्य से ही पूर्ण हुआ ।

अभिरुचियाँ :–

'मालती जोशी' मध्यमवर्गीय जीवन से जुडी रहने के कारण 'रसोई' उनकी दृष्टि से अभिमान की बात है । नारी सुलभ पाकशास्त्र में ये निपुन है । केवल परिवारजनों को ही नही अपितु घर में आये मेहमान को स्वादभरा भोजन खिलाकर तृप्त कराना मालती का एक विशिष्ट गुण है ।

इसी प्रकार ऊनी कपडे तथा स्वेटर को बुनना ऊनी से अन्य डिजाईन से शोभायमान चीजों को तैयार करने में भी ये कुशल रही । मालती जोशी संगीत की प्रेमी है । मैट्रिक में ''संगीत'' आपका एक विषय होने से 'संगीत' के साथ आपका अटूट रिस्ता निर्माण हो गया । इसी कारण संगीत के चुनिंदा कार्यक्रम सुनकर आप नई स्फूर्ति से भर जाती है । संगीत के विभिन्न सुरों एवं रागों तथा ताल एवं लय की गहरी पहचान है । शास्त्रीय संगीत के संदर्भ में आपकी धारण है कि शास्त्रीय संगीत में शास्त्र ही सब कुछ नही

है, बोल के मर्म को समझना चाहिए, गायन में मिठास भी होनी चाहिए । यह मिठास केवल स्वर को साधने से नहीं आती । उसके लिए शब्दों की तह तक जाना पडता है गायक जब गीत में प्राण उँडेलता है, तब जाकर बात पेदा होती है । संगीत एक साधना एवं तपस्या है । इस प्रकार जोशी जी की संगीत में गहरी पैठ है । यही कारण है कि उनकी अधिकांश कृतियों में "संगीतज्ञ" कई बार प्रतिबिंबित होता है । "मन ना भए दस बीस" "कुहासें", "स्वयंवर" "एक जंगल आदमियों का" आदि कहानियों में लखिका का संगीतज्ञ व्यक्तिमत्व मुखर हुआ है ।

बाल साहित्य में मालतीजी की बालकों के प्रति सहज वात्सल्य, ममता, करुणा और आत्मीयता का दृष्टांत होता है । इसी प्रकार नारी जीवन पर आधारित आपकी रचनाएँ नारी का मनोवैज्ञानिक चित्र प्रस्तुत करती है ।

दरअसल मालती जोशी की कहानियाँ नारी का संवेदनशील रुप ही अंकित करती है । सामाजिक एवं राजनीतिक विसंगतियों से निर्मित पारिवारिक समस्याएँ जब उन्हे व्याकुल कर देती है तो अनायास उनकी कहानियों में या उपन्यास में उन समस्याओं का प्रतिबिंब दिखाई देता है ।

मालती जोशी की रचनाओं में पुरुष वर्ग को दुय्यम दर्जा दिया है इसी कारण इन्होंने पुरुष को कायर, दुर्बल, नाकाम, देाषी, हीन चित्रित किया है तो नारी को आदर्श त्याग, कष्ट, पीडा, दुःख, घुटन, शोषण, सहनशीलता, सहिष्णुश्तता तथा ममतामयी, विवेकशील समर्पिता, की प्रतिमा के रुप में चित्रित किया है । इससे नारी वर्ग के प्रति संवेदनशीलता का परिचय मिलता है ।

आधुनिक युग में पुत्र और पुत्री को समान दृष्टिकोण से देखनेवाली 'मालतीजी' एक आदर्श लेखिका है । पुत्री न होने का अभाव हमेशा उनके मन में खटकता रहता है तभी तो आप अपनी रचनाओं में चित्रित पुत्रियों पर तृप्त है । जैसे 'समर्पण का सुख ' नामक उपन्यास अपनी 'अजात कन्या' को समर्पित करते हुए लिखती है – " अपनी अजात कन्या को जो अनेक नाम और रुप धरकर मेरी कहानियों में आयी है" [2] । बेटे कि अपेक्षा बेटी के प्रति मालतीजी का दृष्टिकोण अधिक आस्थाशील प्रतीत होता है । आपकी धारणा है कि लडकी साये की तरह माँ के आसपास घूमती है, उसका सुख -- दुःख समझती है । माँ का मन पढना तो लडकियों को आता है । लडकी केंवल लडकी ही नही होती बल्कि कुछ क्षणों पर माँ की अंतरंग की सखियाँ भी होती है ।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR
KOLHAPUR

'दहेज प्रथा' भारतीय समाज में फैली एक भीषण रोग है जिसपर मालती जोशी ने एकाधिक कृतियों में कठोर प्रहार किया है । दहेज के अभाव में अनब्याही तथा अनचाही शादी के बंधन में मजबूरन फँसनेवाली युवतियों के प्रति "मालती जोशी की कहानियाँ" शीर्षक संग्रह समर्पित करते हुए लिखती है -- "इस अभागे देश की उन असंख्य किशोरियों के नाम चांदी के चंद टुकडों के अभाव में जिनके हाथ पीले' नही हो सके" [3] । उन्हे इस बात से घृणा होती है कि शादी ब्याह में लडकी के रुप, गुण, शिक्षा, संस्कार की अपेक्षा दान दहेज पर अधिक ध्यान केंद्रित किया जाता है । बडे आदमियों की बेटियाँ देखकर नही, तौलकर ब्याही जाती है ।

श्रीमती जोशी अपनी अभिव्यक्ति में स्त्री को लिजलिजी भावुक निरहि नही बनाती बल्कि उसके साहस, विवेक, उसके आत्मविश्वास और उसकी आदर्शता की पर्दाधर प्रतीत होती है" [4] । स्त्री की वह स्वतंत्र पक्षधर है । इसी कारण वह स्त्री को पुरुष के हाथ की कठपुतली नही बनने देता चाहती 'इतनी दिनों तो घर में मेरा अस्तित्व केवल शो केस में रखी गुडिया जैसा ही था । स्त्री कोई प्रदर्शन की वस्तु नही है । कोई मोम की गुडिया समझ लिया है मुझे कि जब चाह प्यार किया जब चाहा दुतकार दिया' [5]। अपना "बोल री कठपुतली" कथा संकलन अपनी आत्मीय पोती (बेटे की बेटी) को समर्पित करते हुए आप लिखती है – "कनुप्रिया को इस शर्त के साथ कि वह किसी के हाथ की कठपुतली न बने" [6] ।

मालती जोशी की दृष्टि से आत्मसन्मान का स्तर ऊँचा है । इनकी नारी विषयक धारणा हमेशा आदर्शवादी ही है । इसी कारण प्रा. सुभाष तलेकर नामक एक हिन्दी के प्रोफेसर से साक्षात्कार के समय उन्होंने कहा था -- "मैने स्त्री को दासी के रुप में कभी नहीं देखा, हालांकि वूमन लिबर्टी की भी मैं अंध समर्थक नही हूँ। नारी मेरी नजरो में गृहलक्ष्मी है । घर की सुख--शांति उसीके दम से है बच्चों को शारीरिक और मानसिक विकास उसीके द्वारा संभव है ।

प्रायः मालती जोशी की दृष्टि सुधारवादी है । परंपरावादी रुढीवादिता का विरोध करते हुए इनकी एकाधिक कृतियों में विधवा विवाह का आग्रह दृष्टिगोचर होता है ।

मालती जोशी की पारिवारिक एवं वैवाहिक जीवन के प्रति यह धारणा है कि -- 'विवाह केवल प्रणय का बंधन नही है । इससे आगे बहुत कुछ है । एक दूसरे को सहारा देने की शर्त है । परस्पर के प्रति विश्वास के साथ जीने की शर्त है'[7]

पारिवारिक जीवन में 'शक' पति--पत्नी के बीच 'संदेह' बिखराव का अंकुर पैदा करता हे इसी कारण आपकी स्वीकृती है कि 'पति--पत्नी' के बीच सुसंवाद होना नितांत आवश्यक है जहाँ उनके बीच संवाद शेष हो जाते हैं, तब दांपत्य जीवन कितना भयावह हो जाता है, यह बात केवल अनुभव से ही समझी जा सकती है ।

दु:ख के संबंध में आपके विचार है कि दांपत्य जीवन में दु:ख को आपस में बाँट लेना चाहिए । अलग अलग दु:ख भोगने से व्यथा बढती है घटती नही । दु:ख मनुष्य को संवेदनशील बनाता है ।

मालतीजी का व्यक्तित्व अत्यंत संस्कारशील है आपका संस्कारी मन आपके साहित्य में कई स्थलोंपर प्रतिबिंबित हुआ है । अँग्रेजी संबोधनों एवं संज्ञाओं के प्रति अपनी अनास्था इसतरह प्रकट होती है कि – 'जिज्जी, सच यह नाम मुझे बडा प्यारा लगा । "मैडम" शब्द से मुझे चिढ होने लगती है । उसमे व्यंग्य की बू आती है 8। भारतीय संस्कृति मं पला मालतीजी का मन पाश्चात्य संस्कृति की अनात्मीयता का मखौल उडाते हुए एक बुजुर्ग पात्र के द्वारा कहलवाता है "दरअसल बेटे मेरे घर में तो कोई लेडी थी नहीं । एक सीधी साधी घरेलू औरत थी" 9 । यहाँ "औरत" शब्द में जो अर्थ – गौरव है वह लेडी, शब्द में प्रतीत नहीं होता ।

'मालती जोशी मूलत: स्वयं एक कवीयत्री भी है । भाव–मधुर कविताएँ लिखनेवाली मालतीजी ने कभी "मालव की मीरा' के रुप में ख्याति प्राप्त की है ।

अपनी कहानियों के विषय के बारे में मालतीजीने अपने पत्र में यह लिखा है --"मेरी सभी कहानियाँ स्त्री जीवन पर आधारित है । वह मेरा या किसी और का भी जीवन हो सकता है । अलग अलग लोगों के जीवन में घटनाएँ मेरी कहानियों का रुप के लेती है । स्त्री के प्रति मेरी धारणा यही रही है कि वह या तो बहुत ज्यादा झुक जाती है या ज्यादा तन जाती है । बॅलन्स होना चाहिए तो आधी समस्याएँ अपने आप हल हो जायेंगी" 10।

इसतरह मालती जोशी का व्यक्तिमत्व नारी जनोचित, भावुक , संवेदनशील, सौजन्य से दीपित है । भारतीय नारी के परंपरागत मूल्यों से आप गौरवान्वीत है ।

साहित्य का सृजनारंभ :–

मालती जोशी की शिक्षा दीक्षा 'इन्दौर' में ही हुअी । साहित्य और संगीत की प्रदीर्घ परंपरा इस शहर में रही है । अतएव अनेक साहित्यकारों तथा प्रतिभासंपन्न व्यक्तियों का संपर्क आपको मिलता रहा । श्रीमान पु.ल.देशंपांडे, डॉ. उपेंद्रनाथ अश्क, भगवतशरण उपाध्याय तथा डॉ. राधाकृष्ण आदि विद्वानों को सुनने–देखने का सुअवसर आपको प्राप्त हुआ । इसी प्रकार विजयालक्ष्मी पंडित तथा शेख अब्दुल्ला आदि राजनितीज्ञों के भाषण सुनने का मौका आपको मिला । इन सब का प्रभाव आपके किशोर मन–मस्तिष्क पर हुआ ।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

आपके साहित्य का सृजनारंभ घर के वातावरण में हुआ स्वयं उन्ही के शब्दों में – "माता–पिता पढने के बेहद शौकीन रहे है ।पढने का शौक बचपन से था फलतः घर में कुछ न कुछ पढने के लिए आता रहता था । पिताजी छुटपुट लेखन भी करते थे उन्होने चार–पाँच कहानियाँ भी लिखी । बंबई में स्थित मेरे मामाजी प्रोफेसर केशव विष्णु बेलसरे आध्यात्मीक विषय के ज्ञाता और लेखक है पर उनसे व्यक्तिगत संपर्क नहीं रहा । पर जिनके भाषण सुनने के कई बार अवसर प्राप्त हूए है । शायद उनका भी कुछ असर रहा हो " ।[11]

इसी प्रकार आकाशवाणी इन्दौर तथा "नई दुनिया" (दैनिक पत्र) ने मालती जोशी को बहुत प्रोत्साहित किया । आपकी छोटी छोटी रचनाएँ इन्ही दो प्रसार माध्यमों से प्रकटीत हुयी ।

वस्तुतः मालती जोशी के साहित्यिक जीवन का शुभारंभ उनके गीतों से हुआ । उस कालखंड में गीत ही अधिक लिखे गये । वे गीत मन के मोहक धुनों के साथ ही उपजते थे । इसलिए विद्यार्थी जीवन में आपके गीत सम्मेलनों में अधिक सराहे जाते थे । गीतों का यह बुखार विद्यार्थी जीवन के साथ ही उतर गया । बाद में गद्य की ओर आप मूड गयी । यह युग आपके लिए संक्रमण का युग था तभी कहानियाँ लिखना प्रारंभ किया । प्रारंभ में कई कहानियाँ लौटती रही, परंतु आपने हिम्मत नहीं हारी इसी कारण लिखना जारी रखा । इसतरह गीतों से तथा बाल–साहित्य से आपकी साहित्य–लेखन की ओर प्रस्तान करने की यात्रा अभी–तक जारी रही है ।

कृतियाँ :–

मालती जोशी ने हिन्दी साहित्य में अनेक विधाओं में अपनी लेखनी चलायी है । गीत, एकांकी, रेखाचित्र, निबंध, रेडियो एवं दूरदर्शन नाटय अवश्य लिखती रही है लेकिन अधिक ख्याति उन्हे कथा–साहित्य में मिली है । उपन्यास के क्षेत्र में भी इनका स्थान अप्रतिम हे । इनके अधिकतम उपन्यास 'उपन्यासिका' की श्रेणी में आते है । वास्तव में मालती जोशी एक ऐसी कथाकार, तथा उपन्यासकार है, जिन्होनें पूरी स्वतंत्रता और सच्चाई के साथ जीवन के यथार्थ चित्र को पेश किया है । इसप्रकार इनकी रचनाएँ सामाजिक और पारिवारिक जीवन का चित्र प्रतिबिंबित करती है । इस दृष्टि से उपन्यास के क्षेत्र में उन्होनें जो कीर्ति हासिल की है वह अन्य

लेखिकाओं के लिए दुष्कर ही है । उनका उपन्यास अंत में उदात्तता की भावभूमि पर जाकर समाप्त हो जाती है । मालती जोशी ने स्वयं अपनी कृति के बारे में यह कहा है – "मैने समाज में व्याप्त इन्ही विसंगतियो को अपनी कहानियों में पिरोने का प्रयत्न किया है" ।[12] अनुभव के तौर पर ही मालती जोशी देखा हुआ, सुना हुआ, अनुभव किया हुआ वास्तविक नीत्य जीवन के घटनाओं को अपनी कल्पना से संवारकर कहानी में अभिव्यक्त करती है – उनके अपने शब्दों में "मैं तो अपनी अनुभूतियों को कागज पर उतारती हूँ, वे अनुभूतियाँ जहाँ से भी मिले" । उन्होनें अपनी साहित्यिक सीमित परिवेश के बहुत ईमानदारी से मान्य किया है कि – "मेरी दुनिया बहुत छोटी हे । घर–परिवार में मेरा मन रम जाता है । बहुत ज्यादा कहीं आती–जाती नही । इसीलिए मेरी अनुभवों की व्याप्ति भी सीमित है । उधार के कथा बीच में नही लेती न तो उसमें लेखक रमता है, न पाठक मध्यमवर्गीय घरेलू महिला हूँ । उसी जीवन को कहानियों में लिखती हूँ । वह सराहा जाता है, यह मेरे लिए गौरव की बात है" ।[13]

मालती जोशी ने जो कुछ लिखा पूरी सच्चाई तथा ईमानदारी से लिखा उनकी अपनी स्वीकृति है – "ईमानदारी मेरे लेखन का मुख्य बिंदु है, अंत: हर पात्र, हर कथ्य सच्चाई की कसौटी पर खरा उतरता है"।

कहानी :–

आपके लेखन का श्री गणेश गीतों से शुरु होकर भी आपकी विशेष पहचान कहानी – लेखिका के रुप में ही रही । आपकी पहली कहानी – "टूटने से जुडने तक" सन 1971 में "धर्मयुग" में प्रकाशित हुअी । इसके बाद कहानी लिखने का सिलसिला जारी रहा जो आजतक जारी रहा है आपकी लगभग सभी कहानियाँ "धर्मयुग" "सारिका" "साप्ताहिक हिंदुस्थान" में प्रकाशित हुयी है ।

आपके कुल मिलाकर (8) आठ कहानी–संग्रह प्रकाशित है पर मुझे पाँचे कहानी–संग्रह उपलब्ध हुअे । इसी उपलब्ध सामग्री पर ही मैने शोध कार्य पूरा किया है ।

"मध्यांतर" (1969) "पराजय" (1979), "मन ना भए दस बीस" (1980), "मालती जोशी की कहानियाँ" (1984), "एक घर सपनों का" (1985), "बोल री कठपुतली" (1989), "आखरी शर्त" (1990) "मोरी रंग दी चुनरिया" (1992) इसतरह कहानी क्षेत्र में मालती जोशी का नाम विगत दो दशको से काफी जाना–जाना हो गया है ।

उपन्यास :–

उपन्यास के क्षेत्र में भी मालती जोशी सफलता और लोकप्रिय के शिखर पर पहुँची हुई लेखिका है । आपके सभी उपन्यास धारावाहिक रुप में पत्र–पत्रिकाओं में छुप चुके है । आपके कुल मिलाकर 18 उपन्यास प्रकाशित हो चुके है । आपका पहला उपन्यास "पटाक्षेप" (1976) में प्रकाशित हुआ । बाद में "पाषाण युग", "निष्कासन", "सहचारिणी", "शोभा यात्रा", "पुनरामगनायच", "राग विराग", "गोपनीय", "ऋणानुबंध", "चाँद अमावस का", "समर्पण का सुख", "ज्वालामुखी के गर्भ में", "सहमे हुए प्रश्न", "परिणय", "विश्वास गाथा", "मन ना-भाए दस बीस" "कोऊ न जाननहार", "अतिक्रमण", "विस्फोट" आदि उपन्यासों ने मालती जोशी के साहित्य में चार चाँद लगा दिये हैं ।

गीत साहित्य :–

मालती जोशी का साहित्य जगत में प्रवेश गीतों से हुआ है । आपके गीत छपने के बजाय छिपकर ही रह गये इन गीतों का उन्स विद्यार्थी जीवन के साथ ही समाप्त हो गया । परंतु इन्दौर के कविता मंचो पर "मै मीरा मतवारी सी हूँ" तथा "तुम मेरे मनमोहन प्रियतम" जैसी भावभूमि की रचनाएँ सस्वर पाठ किया करती थी । आपने स्न 1950 से 56 से लगभग सौ के आसपास भाव–मधुर गीत लिखे । आपके दो गीत "हृदय की माँग" (वीणा सन 1952) तथा "तुम मेरे मन मोहन" "वीणा" स्वर्ण जयंती विशेषांक में प्राप्त होते है । महाविद्यालयीन शिक्षावधि में आपने कवि–सम्मेलनों में खूब सहभाग लिया । डॉ. सुमन, डॉ. बच्चन, वीरेंद्र मिश्र, नीरज, चंचल, अंचल आदि सरस्वती पुत्रों को सुनने का सौभाग्य आपने पाया है ।

बाल साहित्य :–

मालती जोशी का बाल साहित्य ही उनकी साहित्यिक जीवन की नींव है । जिसपर आपका विविधोन्मुखी साहित्य विधा का महल निर्माण हो गया इनमें मुख्य है – "दीदी की घडी"ए "जीने की राह" उल्लेखनीय बाल कथा संग्रह है ।

रुपांतरित नाटय साहित्य :–

मालती जोशी की कहानियों एवं उपन्यासों के आकाशवाणी तथा दूरदर्शन द्वारा नाटय

रुपांतर प्रसारित हो चुके है । रेडियो द्वारा आपकी पचासों कहानियाँ प्रस्तुत हुइ है – दजेन से भी ज्यादा कहानियों के नाटय रुपांतर हुए है जिसमें भोपाल आकाशवाणी द्वारा "कवच" कहानी तथा दिल्ली दूरदशेन पर "एक और देवदास", टूंटने से जुडने तक", "स्वयंवर", "संवेदना" आदि कहानियाँ बंबइ दूरदशेन पर भी नाटय रुपांतारेत हुयी है । आपके सुपुत्र श्री सच्चिदानंद द्वारा "राग–विराग" का दूरदशेन नाटयीकरण का रुपांतरण हो रहा है ।

अनुवाद :–

'अनुवाद' के क्षेत्र में मालती जोशी का स्थान महत्वपूणे है आपने खुद ही मराठी भाषा मे 2–3 दर्जन कहानियों का अनुवाद किया है । मालती जोशी की कइे कहानियाँ एवं लघु उपन्यास कन्नड, गुजराती, मलयालम, मराठी उदू, तथा अंग्रेजी में अनुवादेत हुए है जिसमें – "पाषाण युग" "मध्यांतर" ज्वालामुखी के गभे में", आदि उल्लेखनीय है । गुजराती भाषा में – "पाषाण युग" "मैं फिर रुकी", आदि प्रकाशित हुअी कन्नड भाषा में भी इनकी 2–3 कहानियाँ अनुवादित हुअी है । मलयालम भाषा में एक कहानी अनुवादेत है । तामेल भाषा में "बेटे की माँ" नामक कहानी के अनुवाद की अनुमति माँगी है । जापानी भाषा में – "उसने नहीं कहा" कहानी प्रकाशित हुअी । रांशेयन भाषा में "वह लडकी" नामक कहानी प्रकाशित हुअी ।

कुछ कहानियों पर आधारित नाटकों का मंचन भी हुआ है ।

दूरदशेन पर प्रसारित साहित्य :–

मालती जोशी की कहानियों का प्रसारण हम दूरदशेन पर भी देखते है । इसमें "पाषाण युग", "एक और देवदास", "मध्यांतर", "स्नेहबंध", "अस्ताचल", "बोर", आदि उल्लेखनीय है ।

जया बच्चन ने एशिया टी.वी. के लिए "साफ फेरे" नामक से आपकी सात कहानियाँ लि है । "गुलबहार" में अपनी सिरियल – "फिरयाद" के लिए आपकी दो कहानियाँ ली है ।

आज भी आपने मराठी और हिन्दी में कहानी लिखने का काम जारी रखा है । यही हमारे लिए गवे की बात है ।

इन दिनों आप कथा–कथन के द्वारा अपनी कहानियों को लोगो तक पहुँचाती है । इस तरह आपकी हिन्दी साहित्य सेवा निरंतर गती से चल रही है ।

पुरस्कार :–

प्रारंभ में मालती जोशीने '1969' में एक बाल कथा प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त किया । बाल–कथाओंके द्वारा आप दो बार पुरस्कृत हो चुकी है । अहिंदी भाषा लेखक के रुप में भी आप '1969' में सन्मानित हो चुकी है । आपकी साहित्यिक अभिरुचि देखकर "श्रेष्ठ कथा" लेखिका के रुप में भी एक संस्था ने आपको सन्मानित किया । "मुख्य अतिथि" के रुप में आपने दर्जनों कार्यक्रम में हिस्सा लिया था । अगस्त '1983' में कलकत्ता की "रचना संस्था" ने रु.5000/– का पुरस्कार देकर आपको सन्मानित किया है । हिन्दी साहित्य सेवा के उपलक्ष में अहिंदी भाषी हिन्दी लेखकों को दिए जानेवाले सन्मान के रुप में भोपाल के हिन्दी भवन की ओर से 1985 में आपको "शिव सेवक तिवारी पदक" प्रदान किया गया था ।

आपके 'पाषाण युग' हिन्दी लघु उपन्यास संग्रह के उन्ही के द्वारा मराठी में अनुवादित "पाषाण" शीर्षक संग्रह को महाराष्ट्र सरकार की ओर से रु. 3000/– का पुरस्कार प्राप्त हुआ है । पुरस्कार के बारे में उनकी धारणा यही रही कि "में पुरस्कार के राजनीति से दूर ही रही" ।[14]

संदर्भ ग्रंथ सूची

1) राग विराग.

2) समर्पण का सुरत – लेखकीय.

3) मालती जोशी की कहानियाँ – लेखकिय.

4) शोभायात्रा – लेखकीय

5) शोभायात्रा – पृष्ठ – 21

6) बोल री कठपुतली – लेखकीय

7) मध्यांतर – पृष्ठ – 19

8) संदर्भहीन – पृष्ठ – 56

9) बोल री कटपुतली – पृष्ठ – 103

10) मालती जोशी का – पत्र – विधी 10 जनवरी 1994

11) मालती जोशी का पत्र – विधी 10 जनवरी 1994

12) बोल री कठपुतली – लेखकीय

13) मालती जोशी की कहानियाँ – लेग्वकीय

14) मालती जोशी का पत्र